20

301hi20

भाव-पल्लवन कैसे करें

भाव-पल्लवन का अर्थ है – किसी भाव का विस्तार करना। इसमें किसी उक्ति, वाक्य, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि के अर्थ को विस्तार से प्रस्तुत किया जाता है। विस्तार की आवश्यकता तभी होती है, जब मूल भाव संक्षिप्त, सघन या जटिल हो। भाषा के प्रयोग में कई बार ऐसी स्थितियाँ आती हैं, जब हमें किसी उक्ति में निहित भावों को स्पष्ट करना पड़ता है। इसी को भाव-पल्लवन कहते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- भाव-पल्लवन का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- भाव-पल्लवन और व्याख्या में अंतर बता सकेंगे;
- भाव-पल्लवन और भावार्थ में अंतर बता सकेंगे;
- भाव-पल्लवन और संक्षेपण में भेद कर सकेंगे;
- भाव-पल्लवन के नियम बता सकेंगे;
- भाव-पल्लवन के विभिन्न विचार बिंदुओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- किसी सूक्ति, गद्यांश अथवा काव्यांश का भाव-पल्लवन कर सकेंगे।

20.1 आइए समझें

भाव-पल्लवन का अर्थ

हम अपने भाषा व्यवहार में कई सूत्र वाक्य, सूक्तियाँ, कहावतें, लोकोक्तियाँ आदि बोलते और सुनते रहते हैं। इन सूक्तियों और कहावतों में भाव या विचार गठे और एक-दूसरे के साथ बँधे होते हैं। इन विचारों या भावों को समझने के लिए इनका विस्तार से विवेचन

करना होता है, ताकि उस सूत्र वाक्य, सूक्ति या कहावत में छिपे गहरे अर्थ को स्पष्ट किया जा सके। हमारी कहावतें या लोकोक्तियाँ हमारे समाज के अनुभव को अपने में समेटे होती हैं। ये लोकोक्तियाँ वस्तुतः पूरे समाज के विचारों का सार प्रस्तुत करती हैं। इसी प्रकार कई विचारक, विद्वान या संत-महात्मा ऐसे सूत्र वाक्य प्रस्तुत करते हैं, जिनमें वे कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक बात कह जाते हैं। इस बात को समझने और समझाने के लिए हमें सोचना भी पड़ता है और उसका विस्तार भी करना पड़ता है। इसी को भाव-पल्लवन कहते हैं। वास्तव में भाषा व्यवहार में निपुण होने के लिए हमें भाव पल्लवन का अभ्यास करना आवश्यक है, जिससे हम ऐसी अभिव्यक्तियों में निहित भाव का इस प्रकार विस्तार करें कि सुनने वाले या पढ़ने वाले व्यक्ति को अपनी बात समझा सकें। इसे विस्तारण, भाव-विस्तारण, पल्लवन आदि भी कहा जाता है।

नीचे कुछ अंश दिए जा रहे हैं। आप इन्हें पढ़िए और सोचिए:

1. *स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।*

2. *जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।*
   जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना।।

3. *परहित सरिस धरम नहीं भाई।*
   पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।

4. *अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।*
   आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

5. *हिंसा बुरी चीज़ है, पर दासता उससे भी बुरी है।*

आपने देखा कि ये वाक्य छोटे तो अवश्य हैं, किंतु इनमें गहरा संदेश छिपा है। इसीलिए ये 'सूत्रवाक्य' कहलाते हैं। इन सूत्र वाक्यों को समझाने के लिए इनका विश्लेषण करना होगा, ताकि संदेश पूरी तरह समझ में आ सके। इन सूत्र वाक्यों में छिपे भाव का विस्तार करने के लिए पहली आवश्यकता है कि हमें इनका पूरा ज्ञान हो अर्थात् उनका पूरा अर्थ हमें मालूम हो। जैसे, *'स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'* उक्ति का भाव-पल्लवन करने से पहले हमें मालूम होना चाहिए कि यह वाक्य किसने, कहाँ तथा किस संदर्भ में कहा था और इसकी पूरी भूमिका क्या है? इस उक्ति का अर्थ देते हुए यह भी बताना चाहिए कि स्वाधीन होने का महत्त्व क्या है? हम अपने अनुभव से यह भी स्पष्ट कर सकें कि स्वाधीन होना किसी की दया पर आश्रित रहना नहीं है, बल्कि प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है। इसी प्रकार *'हिंसा बुरी चीज़ है, पर दासता इससे भी बुरी है' या 'जहाँ सुमति तहँ संपति नाना'* का पूरा मंतव्य या उसमें निहित अर्थ हमें मालूम होना चाहिए। इसका भाव-पल्लवन लिखते समय हमें भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए और साथ में हमारा अनुभव भी गहरा तथा विस्तृत होना चाहिए। भाव-पल्लवन का पूरा अर्थ समझने के लिए यह ध्यान रखना चाहिए कि कहावतों, सूक्तियों, लोकोक्तियों आदि में बहुत से भाव और विचार कूट-कूट कर भरे होते हैं। वह देखने में तो छोटे लगते हैं, लेकिन उनके भाव गंभीर और बड़े ही अथाह होते हैं। वास्तव में इन छोटे वाक्यों या लोकोक्तियों के मूल में समाज के अनुभव होते हैं। उनमें विचारात्मक और भावात्मक प्रवाह होता है। ये

एक प्रकार से गागर में सागर के समान होते हैं। भाव-पल्लवन में हम गागर में भरे उस सागर को निकाल कर उसका पूरा प्रवाह दिखाना चाहते हैं, जिससे दूसरों को यह पता चल सके कि उस सागर का असली रूप क्या है? उसमें कौन-कौन से भाव रूपी मोती छिपे हुए हैं? यही भाव-पल्लवन का लक्ष्य होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि भाव-पल्लवन में किसी गंभीर सूक्ति या कहावत की ऐसी व्याख्या की जाती है, जिससे लेखक का आशय या मंतव्य या संदेश पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है।

पाठगत प्रश्न 20.1

1. निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए। यदि ये कथन सही हों तो उसके सामने सही का निशान (√) लगाइए और गलत हो तो गलत का निशान (X) लगाइएः

   (क) कहावतें और लोकोक्तियाँ समाज के अनुभवों पर आधारित होती हैं। ( )

   (ख) भावों और विचारों का विस्तार करना भाव पल्लवन कहलाता है। ( )

   (ग) भाव-पल्लवन के लिए भाषा का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है। ( )

   (घ) भाव-पल्लवन में अनुभव की अपेक्षा कल्पना अधिक होती है। ( )

   (ङ) कहावतें, लोकोक्तियाँ या सूक्तियाँ गागर में सागर के समान होती हैं। ( )

2. भाव-पल्लवन का अर्थ है –

   (क) किसी गद्यांश को विस्तृत ढंग से समझाना।

   (ख) किसी कविता के अंश की व्याख्या करना।

   (ग) किसी उक्ति, सूक्ति या कहावत में निहित भाव का विस्तार करना।

   (घ) किसी भी विचार को बढ़ा-चढ़ाकर लिखना।

20.2 भाव-पल्लवन और व्याख्या

अब आप जानते हैं कि भाव-पल्लवन में किसी उक्ति, सूक्ति, कहावत आदि में निहित भाव का विस्तार किया जाता है, किंतु इस विस्तार में छिपे हुए भाव को स्पष्ट करना हमारा मुख्य उद्देश्य होता है न कि उस पर टीका-टिप्पणी करना या उसकी समीक्षा अथवा आलोचना करना। उदाहरण के लिए *''स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है''* का भाव-पल्लवन करते हुए हम यह नहीं कह सकते कि यह उक्ति लोकमान्य तिलक ने केवल अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ी जाने वाली लड़ाई में कही थी और अब इसका कोई महत्त्व नहीं है या 'जन्मसिद्ध अधिकार' कहना उचित नहीं है या जो लोग इस उक्ति को नहीं मानते, वे देशद्रोही हैं। भाव-पल्लवन में ये सभी बातें नहीं आएँगी। केवल इसमें निहित भाव को विस्तार से स्पष्ट किया जाएगा।

किसी उक्ति की व्याख्या करते समय उसमें निहित भाव को विस्तार से स्पष्ट किया जाता है, उसमें टीका-टिप्पणी या आलोचना करने की पूरी छूट होती है। इसमें भाव

टिप्पणी

पल्लवन की सीमाएँ नहीं होती। इसमें किसी उक्ति या सूत्र के पक्ष या विरोध में अपना मत प्रकट कर सकते हैं। उसके विभिन्न पक्षों पर, उसके गुणावगुणों पर चर्चा करते हुए ऐसे निष्कर्ष पर भी पहुँच सकते हैं, जो उसमें निहित भाव के एकदम विपरीत भी हो सकते हैं। *'स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'* की व्याख्या करते हुए हम कह सकते हैं कि विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि हर देश और धर्म के लोगों ने लड़कर स्वाधीनता प्राप्त की है और लड़ते हुए अपनी स्वाधीनता की रक्षा की है। यदि ये लोग स्वाधीनता को जन्मसिद्ध अधिकार मानकर आश्वस्त बैठे रहते तो शीघ्र ही पराधीन हो जाते, क्योंकि दूसरों को अपने वश में करना मानवीय प्रवृत्ति का महत्त्वपूर्ण लक्षण है। व्याख्या में यह भी कह सकते हैं कि यद्यपि लोकमान्य तिलक ने यह उक्ति अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ते हुए कही थी, लेकिन यह उक्ति अन्य संदर्भों में भी कही जा सकती है। इसके अतिरिक्त यह पराधीनता के समय जितनी उपादेय है, उतनी स्वतंत्रता के समय में भी है।

इस प्रकार भाव-पल्लवन करते समय उक्तियों, सूक्तियों आदि में केंद्रीय भाव को स्पष्ट करने के लिए उसका विस्तार किया जाता है जब कि व्याख्या में विस्तार से विवेचन के साथ-साथ टीका-टिप्पणी या आलोचना भी की जाती है। व्याख्या में संदर्भों का उल्लेख भी किया जाता है और उदाहरण भी दिए जाते हैं, जबकि भाव-पल्लवन में यह छूट नहीं है।

20.3 भाव-पल्लवन और भावार्थ

भाव-पल्लवन के बारे में ऊपर पढ़ चुकने के बाद आप इसके स्वरूप से कुछ-कुछ परिचित हो चुके होंगे, भाव-पल्लवन और भावार्थ में भी काफी अंतर है। भावार्थ में भाव-विस्तार की एक सीमा होती है, जबकि भाव-पल्लवन में ऐसी कोई सीमा नहीं है। भावार्थ में किसी भी उक्ति अथवा सूक्ति के केंद्रीय भाव को संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें मूल भाव को व्यक्त करना होता है, उसे विस्तार देना नहीं होता। भाव-पल्लवन में सूत्र वाक्य सूक्ति का विवेचन तब तक किया जा सकता है, जब तक लेखक का मूल मंतव्य पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो जाता। उसे कई अनुच्छेदों में लिखा जा सकता है। भावार्थ में सूक्ति का मूल अर्थ देने की अपेक्षा की जाती है। भावार्थ में केवल मूल भावों को लिया जाता है, जबकि भाव-पल्लवन में मूल और गौण दोनों भावों को दिया जाता है। इस प्रकार 'भावार्थ' सीमित शब्दों में केंद्रीय भाव को स्पष्ट करता है।

पाठगत प्रश्न 20.2

1. निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए। यदि ये कथन सही हों तो उसके सामने रिक्त स्थान पर सही का निशान (√) लगाइए और गलत हों तो गलत का निशान (X) लगाइए:

   (क) भाव-पल्लवन में टीका-टिप्पणी और आलोचना होती है। ( )

   (ख) व्याख्या में संदर्भ का उल्लेख किया जाता है और उदाहरण भी दिए जा सकते हैं। ( )

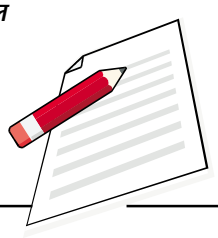

(ग) व्याख्या और भाव-पल्लवन एक ही हैं। ( )

(घ) भावार्थ में किसी भी उक्ति या सूक्ति के केंद्रीय भाव को संक्षेप में स्पष्ट किया जाता है। ( )

(ङ) भावार्थ को कई अनुच्छेदों में लिखा जाता है। ( )

2. केवल केंद्रीय भाव स्पष्ट किया जाता है –

(क) व्याख्या में (ग) भाव-पल्लवन में

(ख) भावार्थ में (घ) आलोचना में

20.4 भाव पल्लवन, संक्षेपण और निबंध

भाव-पल्लवन संक्षेपण का एक प्रकार से विलोम है। संक्षेपण का अर्थ होता है – संक्षिप्त या छोटा रूप। इसमें विस्तृत विषय को संक्षेप में दिया जाता है। भाव-पल्लवन का अर्थ होता है – विस्तृत या बड़ा रूप। इसमें किसी उक्ति या विचार-सूत्र का विस्तार से विवेचन किया जाता है। संक्षेपण किसी बड़ी रचना के मूलभूत अर्थ या केंद्रीय भाव को पकड़ने की कोशिश करता है। इसके विपरीत भाव-पल्लवन मूल अर्थ या केंद्रीय भाव को विस्तार से समझाने का प्रयत्न करता है।

भाव-पल्लवन के बारे में पढ़ने के बाद आपने यह अनुमान लगाया होगा कि भाव-पल्लवन तो एक छोटा निबंध है। यह सही है कि भाव-पल्लवन एक प्रकार का लघु निबंध होता है, किंतु इस पर निबंध के नियम पूरी तरह लागू नहीं होते। निबंध के विषयों की सीमा नहीं होती जबकि भाव-पल्लवन के अंतर्गत सभी प्रकार के विषय नहीं आते। निबंध में उद्धरणों, दृष्टांतों, प्रसंगों आदि का बहुल प्रयोग हो सकता है, जबकि भाव-पल्लवन में बहुत कम। इस प्रकार भाव-पल्लवन को निबंध नहीं कहा जा सकता।

पाठगत प्रश्न 20.3

1. निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों को भरिए।

(क) भाव-पल्लवन संक्षेपण का ..... है।

(ख) संक्षेपण किसी बृहत् रचना के ..... को पकड़ने की कोशिश करता है।

(ग) भाव-पल्लवन मूल अर्थ या केंद्रीय भाव को ..... से समझाने की कोशिश करता है।

(घ) भाव-पल्लवन पर निबंध के नियम पूरी तरह लागू ..... होते।

(ङ) निबंध में उदाहरणों, दृष्टांतों, प्रसंगों आदि का ..... होता है।

2. भाव-पल्लवन और निबंध लेखन के विषयों में मुख्य अंतर क्या होता है?

टिप्पणी

20.5 भाव-पल्लवन की प्रक्रिया

आपको अब तक मालूम हो गया होगा कि भाव-पल्लवन से लेखन शक्ति का विकास होता है। आइए, अब हम देखें कि अच्छा भाव-पल्लवन लिखने की प्रक्रिया क्या है और इसके लिए हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

भाव-पल्लवन की प्रक्रिया के निम्नलिखित चरण हैं :

1. किसी उक्ति, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि को समझना;
2. उक्ति, सूक्ति आदि के मूल भाव को स्पष्ट करने वाले विचार बिंदुओं को लिखना;
3. इन बिंदुओं को क्रमवार रखना;
4. इन बिंदुओं का विस्तार करना; और
5. मूल भाव का प्रभावपूर्ण शैली में वर्णन करना।

सबसे पहले हम किसी उक्ति, सूक्ति, कहावत आदि पर विचार करते हैं और यह समझने का प्रयास करते हैं कि उसमें कौन-सा भाव निहित है और उसका क्या अर्थ है? इसके बाद उस उक्ति अथवा वाक्य के अर्थ या भाव को स्पष्ट करने के लिए तथा उसे प्रभावी बनाने के लिए अन्य मिलते-जुलते विचार बिंदुओं को अपने मन में जुटाते हैं तथा उन्हें किसी कागज़ पर लिखते है। इसके बाद मूल भाव पर ध्यान देते हुए उन्हें क्रमवार रखते हैं। तत्पश्चात् इन बिंदुओं को स्पष्ट करते हुए इसका विस्तार करते हैं ताकि उक्ति, वाक्य का मूल भाव पूरी तरह से स्पष्ट हो सके। इसमें यह भी ध्यान देते हैं कि मूल भाव का वर्णन प्रभावपूर्ण शैली में हो।

भाव-पल्लवन की प्रक्रिया इस प्रकार हो सकती है:

1. सर्वप्रथम किसी दी गई मूल उक्ति, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि पर थोड़ी देर तक सोचें ताकि मूल भाव अच्छी तरह समझ में आ जाए।
2. मूल भाव को स्पष्ट करने और प्रभावपूर्ण बनाने वाले अन्य भावों या विचार बिंदुओं को इकट्ठा करें।
3. इनको संकेत के रूप में एक पृष्ठ पर लिख लें ताकि कोई विचार छूट न जाए।
4. इसके बाद इन विचार-बिंदुओं को एक-एक करके क्रमानुसार लिखें। यदि संभव हो तो प्रत्येक भाव या विचार अलग-अलग अनुच्छेद में भी दे सकते हैं।
5. मूल भाव का विस्तार करते समय उसकी पुष्टि में कोई उदाहरण या तथ्य देने की आवश्यकता पड़ती है, तो वह भी दिया जा सकता है।
6. भाव-पल्लवन की भाषा सरल और सुबोध होनी चाहिए ताकि भाव अच्छी तरह स्पष्ट हो सकें।
7. जहाँ तक संभव हो, वाक्य छोटे होने चाहिए और अलंकारपूर्ण भाषा से बचना चाहिए।
8. भाव-पल्लवन अन्य पुरुष शैली में लिखा जाना चाहिए।

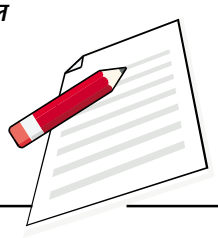

टिप्पणी

9. प्रत्येक बात को विस्तार से लिखने की कोशिश करनी चाहिए।

10. इसमें किसी अनावश्यक या अप्रासंगिक बात का उल्लेख नहीं होना चाहिए। केवल वही बातें रखी जाएँ जो मूल भाव के लिए उचित और अपेक्षित हों।

11. भाव-पल्लवन को लिख लेने के बाद इसको एक-दो बार अवश्य पढ़ना चाहिए, ताकि यदि कोई विचार-बिंदु या बात रह गई हो तो उसे जोड़ा जा सके और यदि उसमें कोई दोष हो तो दूर किया जा सके।

पल्लवन करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए:

⟹ मूल भाव पर विशेष ध्यान देना।

⟹ मूल भाव का विस्तार करते हुए उसकी पुष्टि में यदि किसी उदाहरण या तथ्य की आवश्यकता पड़े, तो उसे भी प्रस्तुत करना।

⟹ सरल और बोधगम्य भाषा का प्रयोग।

⟹ अनावश्यक या अप्रासंगिक विचार बिंदुओं से बचना।

⟹ मूल भाव पर किसी प्रकार की आलोचना और टिप्पणी न करना।

⟹ अन्य पुरुष शैली का प्रयोग करना।

पाठगत प्रश्न 20.4

1. भाव-पल्लवन पर निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए। यदि ये कथन सही हों तो उसके सामने रिक्त स्थान पर सही का निशान (√) लगाइए और गलत हों तो गलत का निशान (X) लगाइए:

   (क) उक्ति, वाक्य, सूक्ति, कहावत आदि पर थोड़ी देर चिंतन करना चाहिए। ( )

   (ख) भाषा अलंकारपूर्ण होनी चाहिए। ( )

   (ग) इसे अन्य पुरुष शैली में लिखना चाहिए। ( )

   (घ) इसे सरल और बोधगम्य भाषा में लिखना चाहिए। ( )

   (ङ) भाव-पल्लवन में मूल भाव या विचार की आलोचना और टीका-टिप्पणी की जा सकती है। ( )

20.6 भाव-पल्लवन के कुछ नमूने

आपने अब तक भाव-पल्लवन के बारे में अच्छी तरह से जान लिया है। अब हम आपको भाव-पल्लवन के दो नमूने दे रहे हैं। भाव-पल्लवन लिखने से पहले आपके सामने कुछ विचार बिंदु दिए जाएँगे, ताकि भाव-पल्लवन लिखने के लिए कुछ मार्ग निर्देश मिल जाए। इसके बाद भाव पल्लवन का पूरा रूप दिया जाएगा। ये दोनों नमूने इस प्रकार है:

उदाहरण - 1 **'जहाँ सुमति तहँ संपति नाना.....'**

शीर्षक पढ़ते ही आपके विचारों का क्रम कुछ इस प्रकार होना चाहिए:

टिप्पणी

विचार बिंदु

1. मनुष्य अन्य जीवों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान और विवेकशील है।
2. बुद्धि के दो पक्ष हैं: सुबुद्धि और दुर्बुद्धि।
3. सुबुद्धि और सुमति एक ही है और दुर्बुद्धि कुमति होती है।
4. सुमति के द्वारा ही संपत्ति की प्राप्ति होती है।
5. सुमति ही सफलता की जननी है।
6. अच्छी बुद्धि के व्यक्ति का सभी आदर करते हैं और वह स्वयं सभी का आदर करता है।
7. सुमति के न होने से व्यक्ति में दंभ, अहंकार, क्रोध आदि दुर्गुण आ जाते हैं।
8. सुमतिहीन व्यक्ति के पास विपत्तियाँ और कष्ट आते हैं।

अब आप उक्त विचारों को अपनी सरल सीधी भाषा में पिरो दीजिए और लिख कर देखिए क्या भाव-पल्लवन का रूप कुछ वैसा ही है जैसा हम आगे दे रहे हैं।

भाव-पल्लवन

संसार के समस्त जीवों में मनुष्य को श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि वह अन्य जीवों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान और विवेकशील होता है। वह केवल अपने तक ही सीमित नहीं रहता अपितु दूसरों का भी ध्यान रखता है। उसमें गुण-दोष और उचित-अनुचित का ज्ञान कराने वाली बुद्धि होती है। इसी आधार पर बुद्धि के दो पक्ष माने गए हैं – एक सुबुद्धि और दूसरी, दुर्बुद्धि। सुबुद्धि की बड़ी महिमा है। इसी को सुमति या अच्छी मति भी कहा जाता है। जब तक मनुष्य में सुमति रहती है, तब तक वह अच्छे कार्य में लगा रहता है और उसमें अच्छे-बुरे का विवेक भी होता है। जब वह सुमति से हटकर कुमति या दुर्बुद्धि वाला हो जाता है, तब वह अनुचित और गलत कामों में पड़ जाता है। सुमति से संपत्ति की भी प्राप्ति होती है। इससे मनुष्य को धन, सम्मान, स्त्री, पुत्र आदि का सुख मिलता है। सुमति वाले लोग मिलजुल कर और ईमानदारी से काम करते हैं। इसी कारण उन पर लक्ष्मी की कृपा रहती है। ऐसे लोगों को सभी व्यक्तियों से सम्मान और आदर मिलता है। इससे उनमें शक्ति पैदा होती है और वे देश, जाति और समाज के लिए तन, मन, धन से कार्य करते हैं। ऐसे लोगों से देश, समाज और परिवार को गौरव प्राप्त होता है। सुमति ही सफलता की जननी है। जीवन में वही व्यक्ति सफल होता है, जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में अपनी बुद्धि से काम लेता है और परिश्रम, ईमानदारी तथा विवेक से काम करता है। वह सभी का सम्मान करता है और बड़ों के प्रति अप्रिय शब्द नहीं बोलता। सभी से नम्रता और उदारता का व्यवहार करता है। यही सुमति के गुण हैं। जहाँ सुमति नहीं रहती वहाँ दंभ, अहंकार, क्रोध और अधीरता के दुर्गुणों का साम्राज्य रहता है। सुमति के न रहने से ही तो कुमति आती हैं। सुमतिहीन लोगों से संपत्ति भी सदैव दूर रहती है और उनका कोई आदर और सम्मान भी नहीं करता। इसी कारण ऐसे लोग विपत्तियों तथा कष्टों से घिरे रहते हैं। इसलिए गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस के सुंदरकांड में कहा है:

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना।।

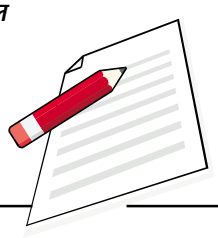

टिप्पणी

उदाहरण - 2 'हिंसा बुरी चीज़ है, पर दासता उससे भी बुरी चीज़ है।'

पहले उदाहरण के समान इस उक्ति को पढ़ने के बाद अपने विचार बिंदु यहाँ लिखिए:

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....

अब निम्नलिखित विचार बिंदुओं को ध्यान पूर्वक पढ़िए। क्या ये बिंदु आपके लिखे बिंदुओं से समानता लिए हैं:

विचारबिंदु

1. प्रत्येक प्राणी में जीवन होता है और किसी को दूसरे के प्राण लेने का अधिकार नहीं हैं।
2. 'अहिंसा परमो धर्मः' का मंत्र प्राचीनकाल से मिलता है।
3. आधुनिक युग में महात्मा गांधी ने अहिंसा का प्रचार किया।
4. हिंसा से भी बुरी चीज़ दासता है।
5. दास व्यक्ति जीवित होकर भी मृत समान है।
6. दासता से मनुष्य का मानसिक विकास नहीं होता।
7. दासता को समाप्त करने के लिए हिंसा की आवश्यकता पड़े तो वह क्षमा योग्य है।
8. अहिंसा का पालन करने का अर्थ शक्तिहीन होना नहीं है।
9. भारत अहिंसा का पुजारी रहा है और अब भी है, लेकिन स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए वह अहिंसा का त्याग भी कर सकता है।
10. स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हिंसा का मार्ग अपनाना बुरा काम नहीं है।

विचार बिंदु किस प्रकार भाव पल्लवन का रूप लेते हैं, आइए पढ़ें–

भाव-पल्लवन

यह सच है कि किसी प्राणी को जीव की हत्या नहीं करनी चाहिए। प्रत्येक पशु-पक्षी और मनुष्य में जीवन होता है और किसी को दूसरे के प्राण लेने का अधिकार नहीं है। भारत प्राचीनकाल से अहिंसा का प्रचार करता आ रहा है 'अहिंसा परमो धर्मः' आधुनिक युग में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी हिंसा के विरोध में आवाज़ उठाई थी और अहिंसा का प्रचार किया था। वास्तव में हिंसा मनुष्य को पशु के समान बना देती है और व्यक्ति में प्रेम तथा स्नेह की भावना समाप्त हो जाती है। निस्संदेह हिंसा बुरी चीज़ है, लेकिन दासता उससे भी अधिक बुरी चीज़ है। कोई भी व्यक्ति स्वतंत्रता खोकर सुख और चैन की नींद नहीं सो सकता। यदि किसी पक्षी को पिंजरे में डाल दिया जाए, तो बाहर

निकलने के लिए तड़फड़ाता है। उदास और दुखी रहता है। मनुष्य तो विवेकशील प्राणी है। उसके पास दिमाग और दिल है, तो वह भला दासता की कड़ियों में कैसे रह सकता है? यदि किसी को विवशता के कारण दास बनकर रहना पड़ता है, तो वह जीवन मृत्यु के समान है। जीवित होते हुए मुर्दे की भाँति जीना भी हिंसा से कम नहीं है। वास्तव में दासता से मनुष्य का मानसिक विकास नहीं हो पाता। वह गुलामों की ज़िंदगी बिताता है और मालिकों के इशारों पर नाचता है। इसलिए कहा गया है – 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं' अतः विचारकों ने यह भी कहा कि गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए यदि अहिंसा का मार्ग भी छोड़ना पड़े, तो वह बुरी बात नहीं होगी। यदि हिंसा भी करनी पड़े, तो वह क्षमा योग्य मानी जाएगी। कुछ लोगों का कहना है कि शक्तिहीन व्यक्ति ही अहिंसा की बात करते हैं। वह उनका भ्रम है। भारत सदैव अहिंसा का पुजारी रहा है, लेकिन इसका यह अभिप्राय नहीं कि वह शक्तिशाली नहीं है। इसी कारण विदेशी शक्तियों ने भारत पर अधिकार जमाने का कई बार प्रयास किया, किंतु भारत के वीर सिपाहियों ने उनके नाकों चने चबा दिए और उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया। इसमें संदेह नहीं कि अहिंसा अच्छी चीज है और हिंसा बुरी चीज़ है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि अहिंसा-प्रेमी व्यक्ति को गुलाम बनाया जाए और वह कुछ बोले भी नहीं। अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए यदि कोई व्यक्ति अहिंसा का मार्ग त्याग देता है, तो वह बुरा काम होगा।

20.7 भाव-पल्लवन के अन्य नमूने

यहाँ हम दो उक्तियों और सूक्ति वाक्यों को ले रहे हैं। पहली सूक्ति की पहले रूपरेखा दी जा रही है और फिर उक्ति का भाव-पल्लवन दिया जा रहा है। आइए दोनों नमूने देखें–

उदाहरण - 3 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई'

रूपरेखा

1. परहित का अर्थ है – दूसरों की भलाई करना।
2. धर्म का अर्थ है – सत्कर्म, पुण्य और सदाचार।
3. मनुष्य सामाजिक प्राणी है और परहित सच्ची मानवता है।
4. मनुष्य को तन, मन, धन से दूसरों की भलाई करनी चाहिए।
5. यदि जड़ पदार्थों में परहित की भावना मिलती है, तो मनुष्य में यह भावना अधिक होनी चाहिए।
6. संसार के सभी धर्मों में परहित सबसे बड़ा धर्म है। उसके समान तो कोई धर्म है ही नहीं।

भाव-पल्लवन

परहित का अर्थ है– दूसरों का भला। इसी को परोपकार भी कहते हैं। दोनों का भाव एक है। यदि एक में दूसरे के हित की भावना है, तो दूसरे में भला करने की भावना छिपी हुई है। अपने हित की चिंता न कर दूसरों का उपकार करना ही सच्चे अर्थ में परहित

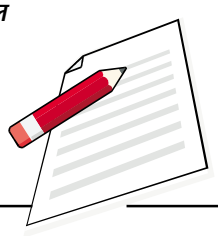

या परोपकार है। धर्म का अर्थ है– पुण्य, कर्त्तव्य, सत्कर्म और सदाचार। यहाँ धर्म का अर्थ मजहब या मत नहीं हैं यदि मज़हब अर्थ है, तो यह मज़हब दूसरे मज़हब के प्रति द्वेष या बुरा करने के भाव लिए हुए नहीं है, बल्कि भलाई करने का भाव लिए हुए है। वास्तव में जिस आचरण या कार्य से समाज का कल्याण होता है, यही धर्म है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसका धर्म है कि वह स्वयं जीए और दूसरों को भी जीने दे। वह अपने सुख-दुख के साथ दूसरों के सुख-दुख की ओर भी ध्यान दे। अपने स्वार्थ को छोड़कर दूसरे के हित की सोचे। अपनी स्वार्थ सिद्धि करना मानवता नहीं है। परहित ही सच्ची मानवता है। यही सच्चा धर्म है। मनुष्य अपनी क्षमता या सामर्थ्य के अनुसार परहित कर सकता है। वह मन से, धन से या तन से या तीनों से दूसरों की भलाई कर सकता है। दूसरों के प्रति सच्ची सहानुभूति करना भी परहित है। किसी को संकट से बचाना, किसी को कुमार्ग से हटाना, किसी दुखी और निराश व्यक्ति को सांत्वना देना भी परहित के अंतर्गत आता है। भगवान राम ने ऋषि-मुनियों की तपस्या में भंग डालने वाले राक्षसों का संहार किया। ईसामसीह ने लोगों का उत्थान किया। सम्राट अशोक ने स्थान-स्थान पर कुएँ, तालाब आदि खुदवाकर तथा वृक्ष लगवाकर जनता का उपकार किया। यही मानवता का प्रमुख धर्म है।

परहित की प्रवृत्ति तो वृक्षों और नदियों में भी पाई जाती है। वृक्ष सभी प्राणियों को फल या छाँव प्रदान करते हैं। मनुष्य तो सभी प्राणियों से उत्कृष्ट प्राणी है। इसलिए उसका परम कर्त्तव्य है कि वह निःस्वार्थ भाव से सभी प्राणियों की सेवा करे। वह मन, वाणी और कर्म से दूसरों का उपकार करे, किसी को पीड़ा न पहुँचाए। संसार के सभी धर्मों में परहित ही सबसे महान् धर्म है। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास ने कहा कि परोपकार के समान कोई भी धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा या दुख पहुँचाने के समान कोई नीचता नहीं है:

परहित सरिस धर्म नहीं भाई,
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।

उदाहरण-4 'अविवेक आपत्तियों का घर है'

भाव-पल्लवन

अविवेक का अर्थ है– विवेक से काम न लेना या ज्ञान की कमी होना। अविवेक अज्ञान का ही एक रूप है। अविवेक और अज्ञान में अंतर भी है। अज्ञान में स्थिति आदि का ज्ञान नहीं होता, जबकि अविवेक में स्थिति आदि का ज्ञान तो होता है, किंतु अहंकार या किसी अन्य कारण से ऐसा कार्य किया जाता है, जो अपने-आप में उचित नहीं होता। यह भी अज्ञानता का ही एक रूप है। इसीलिए अविवेक को दोषी माना गया है क्योंकि इसके कारण व्यक्ति के सभी गुण दब जाते हैं। विवेकी होने से व्यक्ति को कई बार कष्ट भी भोगना पड़ता है और दुख उस व्यक्ति के यहाँ अपना निवास बना लेते हैं।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य में विवेक आवश्यक है। विवेक व्यक्ति को विचारशील, सहनशील, धीर और साहसी बनाता है। विवेक से सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। संपत्ति की प्राप्ति होती है। विवेक के बिना दुख और विपत्ति की प्राप्ति होती है। कल्याण

के स्थान पर दुर्गति होती है। अविवेक से मानव जीवन के विकास में बाधा पड़ती है। इतिहास में विवेकहीन व्यक्तियों के कई उदाहरण मिल जाते हैं। इसी अविवेक के कारण कई साम्राज्य नष्ट हो गए। इसी के कारण रावण के पूरे वंश का नाश हो गया। इसी विवेकहीनता के कारण भारतीय नरेश परस्पर लड़ते थे। इसी के कारण विदेशी आक्रमणकारियों को भारत पर आक्रमण करने का अवसर मिला। भारत परतंत्रता की ज़ंजीरों में बँध गया। अविवेक मनुष्य का शत्रु है। वह मनुष्य को मनुष्य बने रहने नहीं देता। इससे अहंकार, कपट, दंभ आदि का जन्म होता है। यहीं से मनुष्य का विनाश होता है। इसीलिए कहा गया है कि विवेक न होने के कारण आपत्तियाँ आ घेरती हैं। मनुष्य सुखी नहीं रहता। उसमें दुख और कष्ट अपना घर बना लेते हैं।

पाठगत प्रश्न 20.5

''मन के हारे हार है मन के जीते जीत'' विषय पर विस्तृत रूपरेखा नीचे दी जा रही है। आप इसके आधार पर अलग कागज़ पर भाव-पल्लवन कीजिए:

1. मानव मननशील प्राणी है। मन उसके संकल्प-विकल्प की शक्ति है।
2. मन की विजय का एक मात्र शस्त्र है– संकल्प। मन ने किसी काम को पूरा करने का संकल्प किया है तो सफलता व्यक्ति के चरण चूमेगी। यदि मन किसी काम को करने में दुर्बलता दिखाएगा तो व्यक्ति को पराजय का मुँह देखना पड़ेगा।
3. सबल मन वाला व्यक्ति अपना भाग्य-निर्माता स्वयं होता है और निर्बल मन वाला व्यक्ति असफलता को अपना दुर्भाग्य मानता है। उसे चारों ओर से निराशा और हताशा मिलती है।
4. मनुष्य को कायर नहीं होना चाहिए। अपने हृदय की दुर्बलता को त्याग कर कर्म करना चाहिए। सबल मानसिक शक्ति ही जीवन में सफलता प्रदान करती है।
5. गुरुनानक जी ने कहा था – 'मन जीते जग जीत।' अतः विश्व को जीतने के लिए मन को जीतना आवश्यक है। मन की पराजय मनुष्य की अपनी पराजय है।

20.8 आपने क्या सीखा

1. भाव-पल्लवन से लेखन शक्ति का विकास होता है। यह किसी उक्ति, वाक्य, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि के अर्थ को पूरी तरह समझने में सहायता करता है। उसमें उक्ति या सूक्ति की विस्तार से चर्चा की जाती है, ताकि लेखक का आशय या मंतव्य पूरी तरह से स्पष्ट हो जाए। यह एक प्रकार का लघु निबंध है, किंतु इस पर निबंध के नियम पूरी तरह लागू नहीं होते।
2. भाव-पल्लवन व्याख्या नहीं है क्योंकि इसमें आलोचना और टीका-टिप्पणी नहीं होती। यह भावार्थ से भी अलग है क्योंकि इसमें केंद्रीय भाव को स्पष्ट करने के लिए अन्य सहयोगी भावों को भी लिखा जाता है। यह संक्षेपण का एक प्रकार से विलोम है।

3. भाव-पल्लवन की प्रक्रिया इस प्रकार है:
   - उक्ति, वाक्य या सूक्ति आदि को समझना।
   - उक्ति, वाक्य या सूक्ति आदि के मूल भाव को स्पष्ट करने वाले भावों को पहचानना।
   - इन भावों का क्रम के अनुसार विस्तार से वर्णन करना।
4. भाव-पल्लवन के समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है:
   - विषय के मूल भाव को पहचान कर विचार बिंदुओं का क्रम निर्धारित करना
   - अनावश्यक बातों को न लिखना।
   - मूल भाव की आलोचना आदि न करना।
   - भाषा का सरल और बोधगम्य होना।
   - भाव-पल्लवन को दोबारा पढ़ना और संशोधन करना।

20.9 योग्यता विस्तार

पुस्तकालय आदि से कहानी, उपन्यास, जीवनी, कविता आदि की पुस्तकें और पत्रिकाएँ लेकर पढ़िए और निम्नलिखित काम कीजिए:

1. उक्ति, वाक्य, सूक्तियाँ आदि चुनिए।
2. कहावतें और लोकोक्तियाँ आदि चुनिए।
3. इसमें से 20-20 अच्छी-अच्छी उक्तियों, वाक्यों, सूक्तियों, कहावतों, लोकोक्तियों, काव्यांशों को याद कीजिए और उनका भाव-पल्लवन करने का प्रयास कीजिए।

20.10 पाठांत प्रश्न

1. भाव-पल्लवन का अर्थ क्या है?
2. भाव-पल्लवन और व्याख्या में क्या अंतर है? इसे स्पष्ट कीजिए।
3. भाव-पल्लवन और भावार्थ में अंतर बताइए।
4. 'भाव-पल्लवन, संक्षेपण का विलोम है।' इसे अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
5. क्या भाव-पल्लवन एक प्रकार का लघु निबंध है? इस संबंध में चर्चा करते हुए दोनों में अंतर बताइए।
6. भाव-पल्लवन की प्रक्रिया के बारे में दस वाक्य अपने शब्दों में लिखिए।
7. नीचे तीन उक्तियों के संक्षिप्त विचारबिंदु दिए गए हैं। इनके आधार पर भाव पल्लवन लिखिए।

   (क) 'सबै दिन जात न एक समान।'

   1. परिवर्तन सृष्टि का अटल नियम।

2. दिनों की परिवर्तनशीलता।
3. सुख-दुख का चक्र।
4. परिश्रम से दिन बदल जाते हैं।
5. मन का निराशावान होना आवश्यक नहीं।

(ख) 'नर और नारी एक गाड़ी के दो पहिए।'

1. वर्तमान युग में हर क्षेत्र में समानता के लिए विवाद।
2. नर और नारी में समानता।
3. अधिकार और कर्तव्य के लिए संघर्ष।
4. नर और नारी दोनों का अपना-अपना महत्त्व।
5. गाड़ी के सभी पहियों का महत्त्व सभी एक-दूसरे के लिए पूरक और उपयोगी।

(ग) 'अधिकार नहीं कर्तव्य बड़ा है।'

1. कर्तव्य और अधिकार का महत्त्व।
2. कर्तव्य और त्याग का संबंध।
3. कर्तव्य और अधिकार का परस्पर संबंध और अंतर।
4. कर्तव्य से व्यक्ति को शांति और सुख की प्राप्ति।

6. नीचे दी गई उक्तियों का भाव-पल्लवन लिखिए:

1. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
2. पर उपदेश कुसल बहुतेरे।
3. मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे।
4. अपनी करनी पार उतरनी।
5. तेते पाँव पसारिए जेती लांबी सौर।

20.11 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1 (क) √ (ख) √ (ग) √ (घ) X (ङ) √ 2. (ग)

20.2 (क) X (ख) X (ग) X (घ) √ (ङ) X 2. (ख)

20.3 (क) विलोम (ख) मूलभूत अर्थ (ग) विस्तार (घ) नहीं (ङ) बहुत प्रयोग
2. भाव पल्लवन के लिए विषय सीमित होते हैं।

20.4 (क) √ (ख) X (ग) √ (घ) √ (ङ) X

20.5 स्वयं लिखिए।